परन्तु भक्तियोग के प्रारम्भ में ही इन सब की सिद्धि हो जाती है। एकमात्र भक्तियोग मानव को शान्ति प्रदान कर सकता है। वास्तव में भक्तियोग ही जीवन की परमोच्च संसिद्धि है।

ॐतत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मसंन्यासयोगो नाम पंचमोऽध्याय. ।।५।।

इति भक्तिवेदान्त भाष्ये पंचमोऽध्यायः।।